

# जीबीयू में वैश्विक सद्भाव के लिए अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन के प्रतिभागियों ने किया शांति मार्च

## भास्कर ब्यूरो

ग्रेटर नोएडा। जीबीयू में बुद्ध धम्म की शिक्षा एवम् वैश्विक कल्याण विषय पर हो रहे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान देश विदेश से आये प्रतिभागियों ने विश्व में समरसता एवम् सदभाव हेतु शांति रैली का आयोजन किया गया। एकता और एकजुटता के दृष्टि से यह एक प्रदर्शन था। बौद्ध धर्म पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रतिभागी विश्व शांति रैली के लिए एक साथ आए, जिसने आशा और सद्भाव का एक शानदार संदेश दिया है। युद्ध, हिंसा, आतंकवाद और विभिन्न संघर्षों से चल रही वैश्विक उथल-पुथल के माहौल में शांति के



लिए प्रार्थना करने के लिए 14 देशों और भारत भर से प्रतिनिधि एकत्र हुए प्रतिभागियों ने इस में भाग लिया। विश्व शांति रैली बौद्धिक प्रवचन और आध्यात्मिक चिंतन के प्रतिष्ठित केन्द्र जीबीयू ऑडिटोरियम से शुरू हुई। वहां

से जुलूस विश्वविद्यालय परिसर में भव्य बुद्ध प्रतिमा तक पहुंचा, जो ज्ञान और करुणा का प्रतीक है। मोमबत्ती की रोशनी में जुलूस ने अपने शांत और चिंतनशील माहौल के साथ एकता, करुणा और शांति की सार्वभौमिक

इच्छा का एक शक्तिशाली संदेश दिया। इसने वैश्विक शांति, समझ और सहयोग को बढ़ावा देने के महत्व की एक मार्मिक अनुस्मारक के रूप में कार्य किया।

इस विश्व शांति रैली ने न केवल बौद्ध धर्म के सार का उदाहरण दिया, बल्कि संघर्ष और हिंसा से मुक्त विश्व के लिए मानवता की व्यापक आकांक्षाओं को भी प्रतिध्वनित किया। यह सामूहिक प्रार्थना की शक्ति और अधिक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण वैश्विक भविष्य की दिशा में काम करने के लिए व्यक्तियों और समुदायों की अटूट प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है।

## दुनिया में बुद्ध को मानने वाले होंगे तो युद्ध नहीं होगा : रामनाथ कोविन्द

ग्रेटर नोएडा, 28 अक्टूबर (देशबन्धु)। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित अभिधम्म कार्यक्रम में कहा कि मैं अपने अनुभव के आधार पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज में प्रशिक्षकों के बीच विषयना शुरू करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में विषयना को पाठ्यक्रम के रूप में रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि विषयना नए भारत के निर्माण के लिए युवा दिग्गहों के बीच मूल्य आधारित शिक्षा में सहायता करेगा। उन्होंने कहा कि मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे किसी और ने नहीं बल्कि ब्रह्मदेव गौतमका जी ने धम्म से परिचित कराया। विषयना ध्यान के अभ्यास के माध्यम से, उन्होंने मुझे यह अनुभव कराया कि शाक्यपुत्र बुद्ध की शिक्षा,



आगर हमारे दैनिक जीवन में लागू की जाए तो वर्तमान समय की सभी समस्याओं के लिए रामबाण है। उन्होंने यूक्रेन युद्ध जिक्र करते हुए कहा कि यदि वहां बौद्ध धर्म के मानने वाले लोग होते तो युद्ध खूद समाप्त हो सकता है। अब इजराइल व हमस के बीच शुरू हो गया। यह उचित समय है जब गौतमबुद्ध के सिद्धांतों पर अमल करने की जरूरत है। विषयना हमें जो जैसा है वैसा देखा नि सिखाती है। उन्होंने कहा कि नेक



■ पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द ने नौकरशाही के लिए विधि पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण स्कूलों में विषयना शुरू करने का किया आह्वान

ईसान होगा तो वह अपनी जिम्मेदारी निभाएगा। इसन को सबसे पहले अच्छा ईसान बनना होगा। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो स्वीन्द कुमार सिन्हा ने कहा कि उत्तर प्रदेश एक ऐसी भूमि है जो बुद्ध के ज्ञान और



उल्लेखनीय है कि चार यहाँ उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। ये पवित्र स्थल अर्थात्: सारनाथ, कुशीनगर, सँकिसा और श्रावस्ती सिर्फ भौगोलिक स्थान नहीं हैं, वे आध्यात्मिक ज्ञान और ऐतिहासिक महत्व के भंडार हैं। वेन धर्मापिपाया ने कहा कि ऐसे समय में जब दुनिया धर्म, धर्म के नाम पर हिंसा का सामना कर रही है, मानव मन घृणा, क्रोध से भरा है और आपसी विनाश के लिए दर दर पैदा कर रहा है, यह केवल बुद्ध की शिक्षा है जो समाज में शांति और स्थिरता लाएगा। आज, हम दुनिया भर के 14 देशों के प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों के साथ-साथ भारत के विभिन्न हिस्सों से आए अपने सम्मानित प्रतिनिधियों का स्वागत करते हैं। यह परिसर में इतना विविध और अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व देखा खुशी का बात है। आपकी उपस्थिति हमारी चर्चों को वैश्विक परिदृश्य प्रदान करती है, और यह बौद्ध धर्म की सार्वभौमिक अपील को पुष्ट करती है।

## बुद्ध के विचारों को मानने वाले होंगे तो तीसरा विश्व युद्ध नहीं होगा

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस पर आयोजित सम्मेलन को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया संबोधित



जीबीयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद। संकेत

### संवाद न्यूज एजेंसी

ग्रेटर नोएडा। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शनिवार को गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस पर तीन दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि बुद्ध के सिद्धांत आज भी उतने प्रासंगिक हैं, जितने पहले थे। युवाओं को स्वावलंबी व सशक्त बनाना जरूरी है। बुद्ध के विचारों को मानने वाले लोग होंगे तो तीसरे विश्व युद्ध की स्थिति नहीं बनेगी। पूर्व राष्ट्रपति ने रूस-यूक्रेन और

### युवाओं को स्वावलंबी व सशक्त बनाने की जरूरत, विश्वविद्यालयों में विषयना शुरू होना चाहिए

इजरायल-हमास युद्ध का भी जिक्र किया। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ, जीबीयू और संस्कृति मंत्रालय ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि यह उचित समय है, अब गौतमबुद्ध के सिद्धांतों पर अमल करने की जरूरत है। आज तक हमें ऐसा कहा नहीं मिला जो यह कह सके कि वह

पूरी तरह से खरा है। हमारा दायित्व है कि गौतमबुद्ध की शिक्षाओं से सभी को जागरूक करें। युवाओं को धम्म के सार्वभौमिक शिक्षा से अवगत करना भी जरूरी है। विषयना हमें जो जैसा है वैसा देखा नि सिखाती है।

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण स्कूलों में विषयना शुरू करने की अपील की। सम्मेलन में संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, श्रीलंका, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, दक्षिणी कोरिया, नेपाल, लाओस समेत देशों के राजदूत व विभिन्न देशों के प्रसिद्ध

शिक्षाविद भाग ले रहे हैं। कुलपति प्रो. रविंद्र कुमार सिन्हा ने कहा कि बुद्ध के आठ पवित्र स्थानों में से चार उत्तर प्रदेश का हिस्सा है। जो भौगोलिक स्थान ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान और ऐतिहासिक महत्व के भंडार हैं।

सम्मेलन में बौद्ध दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर और उनके वैश्विक सुख-सुविधा के संदर्भ में पेपर प्रस्तुत किए जाएंगे। विशेष अतिथि प्रो. कोटागित्तिरे राहुल अनुनायक थेरा, रजिस्टर विश्वास रिपब्लिकी सलित कई देशों के बौद्ध धर्माचार्य मौजूद रहे।

# इजराइल व हमास में यदि बौद्ध धर्म के मानने वाले लोग होते तो नहीं होता युद्ध : पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद



## मास्कर ब्यूरो

ग्रेटर नोएडा। शनिवार को गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस को किया संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि बौद्ध धर्म के सिद्धांत आज भी उतने प्रासंगिक जितने पहले, युवाओं को स्वावलंबी व सशक्त बनाना जरूरी, बुद्ध के विचार को मानने वाले होंगे तो तीसरे विश्व युद्ध की स्थिति नहीं बनेगी कोविंद ने कहा कि बौद्ध धर्म के सिद्धांत आज भी उतने प्रासंगिक जितने पहले, युवाओं को स्वावलंबी व सशक्त बनाना जरूरी, बुद्ध के विचार को मानने वाले होंगे तो तीसरे विश्व युद्ध की स्थिति नहीं बनेगी। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय संस्कृति मंत्रालय के साथ गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा में 28 से 30 अक्टूबर, 2023 को अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और

## ● पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जीवीयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस को किया संबोधित

विपासना आचार्य डॉ. सत्य नारायण गोयंका का जन्म शताब्दी वर्ष का जश्न मना रहे हैं। शरद पूर्णिमा के पूर्णिमा दिन शनिवार को आई बी सी के प्रमुख कार्यक्रम अभिधम्म दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रामनाथ कोविंद, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, और विशेष अतिथि वरिष्ठ प्रोफेसर कोट्यापतिये राहुल अनुनायक थेरा, कोटे अध्याय श्रीलंका के सवोपाध्यक्ष और अनुनायक सुप्रोम संघ परिषद शामिल हुए। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा की एक साल से अधिक समय से चल रहे यूक्रेन युद्ध जिक्र करते हुए



कहा कि यदि वहां बौद्ध धर्म के मानने वाले लोग होते तो युद्ध खुद समाप्त हो सकता है। एक युद्ध समाप्त नहीं हुआ अब इजराइल व हमास के बीच शुरू हो गया। यह उचित समय है जब गौतमबुद्ध के सिद्धांतों पर अमल करने की जरूरत है। पूर्व राष्ट्रपति शनिवार को गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे आज तक ऐसा कोई नहीं मिला जो कहे कि पूरी तरह से खुश हूँ। यह उचित समय है जब बौद्ध धर्म के सिद्धांतों पर अमल करें। ऐसे में हमारा दृष्टिकोण है कि गौतमबुद्ध की शिक्षाओं से जागरूक करें। इसमें युवाओं की बड़ी भूमिका होती है। युवाओं को स्वावलंबी व सशक्त बनाना जरूरी है। धम्म के सार्वभौमिक शिक्षा से अवगत कराना जरूरी है। विपासना हमें जो जैसा है वैसा देखना सिखाती है। उन्होंने कहा कि नेक इंसान होगा तो

वह अपनी जिम्मेदारी निभाएगा। इंसान को सबसे पहले अच्छा इंसान बनना होगा। अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस के साथ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की बढ़ती लोकप्रियता को देखा जा रहा है। इसके साथ ही, 10 से अधिक देशों के राजदूतों और उच्च आयुक्तों व दुनिया के विभिन्न देशों के प्रसिद्ध शिक्षाविद्वान ने भाग लिया। जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, श्रीलंका, म्यांमार, दक्षिणी कोरिया, नेपाल, लाओस, इत्यादि। ये प्रतिष्ठित विद्वान बौद्ध दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर और उनके वैश्विक सुख-सुविधा के संदर्भ में दिलचस्प पेपर्स प्रस्तुत करेंगे। इस दौरान गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति रजिस्ट्रार विश्वास त्रिपाठी, डॉ. अरविंदसिंह, और देश व विदेश के बौद्ध धर्माचार्य सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

## पाठ्यक्रमों में विपश्यना शामिल हो : रामनाथ कोविंद

### संबोधन

ग्रेटर नोएडा, संवाददाता। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शनिवार को नौकरशाही के लिए विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण स्कूलों में विपश्यना शुरू करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय (जीवीयू) में विपश्यना को पाठ्यक्रम के रूप में रखा जाए। यह नए भारत के निर्माण के लिए युवा दिग्गमों के बीच मूल्य आधारित शिक्षा में सहायता करेगी।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि विपश्यना को अगर हमारे दैनिक जीवन में लागू की जाए तो वर्तमान समय की सभी समस्याओं के लिए यह रामबाण है। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ (आईबीसी) और गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय ने संस्कृति मंत्रालय के साथ अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस

### व्या है विपश्यना

विपश्यना भारत की 2500 वर्षीय पुरानी एक धार्मिक विधि है। करीब 2500 वर्ष पूर्व भगवान गौतमबुद्ध ने इसकी खोज की थी। विपश्यना का मतलब है कि जो वस्तु सचमुच जैसी हो, उसे उसी प्रकार से जान लेना। यह अंतमन की गहराइतों तक जाकर आत्मनिरीक्षण द्वारा आत्मशुद्धि की साधना है।

और विपासना आचार्य डॉ. सत्य नारायण गोयंका का जन्म शताब्दी वर्ष पर दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि अभिधम्म दिवस बुद्ध के स्वर्ण के दिव्य क्षेत्र से संकासिया में अवतरण का प्रतीक है। इसे वर्तमान में भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के फर्रुखाबाद जिले में संकिसा बस्तपुर के रूप में जाना जाता है। बौद्ध ग्रंथों में दर्शाया गया है कि देवताओं और अपनी माता को साक्षी मानकर अभिधम्म की शिक्षा देने के बाद वे यहीं अवतरित हुए थे।



गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में शनिवार को आयोजित एक कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शिरकत की। ● हिन्दुस्तान

## शिविर में आठफीसदी मानसिक रोगी मिले

नोएडा। स्वास्थ्य विभाग के मानसिक स्वास्थ्य शिविर में आठ प्रतिशत मानसिक रोगी मिले। दार्द्री में शुक्रवार को आयोजित शिविर में 565 मरीजों की जांच की गई, जिसमें 42 मानसिक रोग से पीड़ित थे।

इन मरीजों को इलाज के लिए जिला अस्पताल के मानसिक स्वास्थ्य विभाग में भुलाया गया है। इनका इलाज और दवाई निसुलक उपलब्ध कराए जाएंगे। डॉक्टरों ने मानसिक रोग के लक्षण और इलाज के बारे में लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मनोचिकित्सक डॉ. तनुजा गुप्ता एवं सीएचसी दार्द्री के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजीव कुमार सारस्वत ने किया।

डॉक्टरों ने बताया कि बड़बड़ाना, वास्तविकता से असहमत होना, बेवजह शक करना, डिप्रेशन, एंजाइटी, मन का उदास रहना, नींद कम आना, नकारात्मक विचार आना, बार-बार हाथ धोना, एक ही विचार बार-बार मन में आना, गुस्सा करना मानसिक रोग हो सकता है।

# कभी भी हो सकती है अगले विश्व युद्ध की शुरुआत : राम नाथ कोविन्द

अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रपति ने की शिरकत

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा: यूक्रेन व रशिया का युद्ध एक वर्ष से चल रहा है। अब इजरायल व हमास युद्ध भी शुरू हो गया है। यह विश्व के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। इन युद्धों को देखने से लगता है कि अगले विश्व युद्ध की शुरुआत कभी भी हो सकती है। युद्धग्रस्त देशों में भगवान बुद्ध के ज्ञान वाले लोग होते तो वहां पर कब का सीज फायर हो गया होता। यह बातें पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द ने शनिवार को गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय (जीबीयू) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस पर कहीं।

राम नाथ कोविन्द ने कहा कि बौद्ध धर्म बहुत पुराना है। पूर्व के मुकाबले वर्तमान में इसकी आवश्यकता अधिक है। धरती पर भगवान बुद्ध का जन्म घन्य है। विपश्यना भारत की उत्पत्ति है, विद्या है। भगवान बुद्ध ने विश्व में इसका प्रचार-प्रसार किया।

उन्होंने कहा कि बिहार भगवान बुद्ध व भगवान महावीर की तपस्थल है। दो वर्ष तक बिहार का राज्यपाल होने के नाते मुझे वहां रहने का अवसर मिला। जब मुझसे कोई यह पूछता है कि आज बिहार की स्थिति क्या है तो मैं कहता हूं कि यह बिहार का दुर्भाग्य है। सभी को चाहिए कि

शिक्षा व्यवस्था का सर्वोच्च उद्देश्य चरित्र का परिवर्तन करना, दी गई जिम्मेदारी को निभाता है अच्छा इंसान



गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बोलते पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द • जागरण

भगवान बुद्ध की शिक्षा अधिक से अधिक प्रसार करें। पूर्व राष्ट्रपति ने गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के वीसी रविंद्र कुमार सिन्हा से धर्म या धंध की संख्याओं पर रिसर्च कराने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का

सर्वोच्च उद्देश्य चरित्र का परिवर्तन करना है। इंसान का नेक इंसान बनाना है। व्यक्ति कितने भी बड़े पद पर क्यों न हो यदि वह अच्छा इंसान नहीं तो वह कुछ भी नहीं।

राम नाथ कोविन्द ने कहा कि मैंने विपश्यना का दस दिन का एक कोर्स किया था। इसके बाद बहुत अच्छा लगा था। दो वर्ष बिहार का राज्यपाल व पांच वर्ष राष्ट्रपति, सात वर्ष तक बंधन में रहा। जिसका प्रमुख कारण रहा कि विपश्यना का अगला कोर्स नहीं कर सका।

इस दौरान तड़पन होती रही। जुलाई 2022 में इससे मुक्ति मिल गई। जिसके बाद अब तक दस दिन के दो कोर्स किए। गुरुग्राम के सोहना में नवंबर में होने वाले विपश्यना कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया जाएगा। लोगों से अपील की कि पत्नी के साथ विपश्यना का कोर्स करने के लिए योजना बनाएं।

योजना भी एक वर्ष बाद की बनाएं। यदि एक माह बाद की योजना बनाएंगे तो परिवार के किसी न किसी कार्यक्रम में जाने के कारण समय नहीं मिल पाएगा। यदि विपश्यना का एक कोर्स करेंगे तो दुनिया को देखने का नजरिया ही बदल जाएगा। तमाम दुखों से मुक्ति मिल जाएगी।

## जीबीयू में पुस्तक का लोकार्पण

ग्रेटर नोएडा। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में सोमवार को बौद्ध अध्ययन के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य की पुस्तक 'संकिसा का अतीत, वर्तमान और भविष्य' का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपति प्रो. सन्तिश्री धुलीपुदी पंडित, अमिता प्रसाद सारभाई, अभिजीत हलधर और डॉ. ग्योर्मित दोर्जे आदि ने किया।

## सम्मेलन के दौरान विचारों के आदान-प्रदान, अनुसंधान और संवाद ने निरस्तित वैश्विक स्तर पर बौद्ध धर्म की समझ और अभ्यास को उन्नत किया होगा प्रो संतिश्री पंडित, वाईस चांसलर, जेएनयू

**पयुचर लाइन टाईम्स**  
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय और अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिषद (बुद्ध), भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के साथ संयुक्त रूप से हिमालय संस्कृति अभ्युपन केंद्र, भारत सरकार के साथ बुद्ध धम्म की शिक्षाओं और वैश्विक कल्याण-प्रकृति, महत्व और अनुप्रयोग पर एक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके साथ ही, बुद्ध धम्म से संबंधित दो महत्वपूर्ण घटनाओं का आयोजन भी हुआ, जिनमें अंतरराष्ट्रीय अर्धधम्म दिवस और विस्मयना आचार्य डॉ. सन नगरण गोएंका के जन्म शताब्दी वर्ष शामिल था। यह एक महत्वपूर्ण घटना थी जिनमें भारत और विदेश से बौद्ध अभ्युपन और बौद्ध धर्म के अनुपसर्कों के बीच विश्व-विस्तार और

को एकत्र लाया। इस सम्मेलन के कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हुईं जो नेम है-जीवोपु के बीच अभ्युपन एवं सम्पत्ता संकाय एवं आईबीसी के आपसी सहयोग में शुरू की गई थी जिनमें बाद में आयोजन समिति के सदस्यों के प्रयास से कई संस्थाएँ जुड़ीं जो बौद्ध धर्म के क्षेत्र में मान्यता पाने वाले बुद्धिजीवों के साथ एक अद्वितीय मंच का संगठन किया।

केंद्रीय हिमालय संस्कृति केंद्र के साथ सहयोग: सम्मेलन को शैक्षिक पहलू को बढ़ाने के लिए समारोह को गुणवत्ता को बढ़ावा देने के साथ सहयोग स्थापित किया गया, संस्थान के निदेशक डॉ. गुरमैत डोर्जे के समर्थन से, इस सम्मेलन को शैक्षिक आधार को मजबूत किया इस सम्मेलन में दार्शनिक विश्वविद्यालय, धम्मपुत्र



विश्वविद्यालय, और धम्मपाई अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थान साथ आये, जिससे शैक्षिक दृष्टिकोण और विशेषज्ञता विभिन्न आयामों को टटोलना जना सुनिश्चित की गई। श्री अर्धजित हालरेर, प्रोफेसर रबींद्र

पथ, और डॉ. नीरज कुमार ने अमूला मार्गदर्शन, मेंटरशिप, और समर्थन प्रदान किया, जिससे सम्मेलन को गुणवत्ता और प्रभाव में बृद्धि हुई। सम्मेलन में वैश्विक बौद्ध समुदाय के प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें यूके, रूस, दक्षिण

कोरिया, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, वियतनाम, म्यांमार, कंबोडिया, थाईलैंड, लाओस, श्रीलंका, भूटान जैसे देशों के प्रतिनिधि और विद्वान शामिल थे।, नेपाल और ताइवान। सात देशों के राजदूतों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिससे सभा में एक राजनीतिक अग्रणी जुड़ गया।

सम्मेलन में 24 शैक्षणिक सत्रों में कुल 187 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें खनाखस भरे सभागार के साथ अर्धधम्म दिवस समारोह, गौतमजी और विपश्यना पर एक खुला संवाद सत्र और एक विचार-के अलावा बौद्ध धर्म के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। सम्मेलन के सत्र विद्यार्थी विषयवस्तु अभ्यास के अर्थ, प्रकृति, महत्व और प्रयोगिता पर विद्वानों के प्रवचन को समृद्ध किया, जिसे बुद्ध

द्वारा फिर से खोजा गया और आधुनिक दुनिया में गौतमका जोड़ा दुनिया पर में लोकप्रिय बनाया गया। अर्धजित हालरेर, आईबीसी ने सम्मेलन के समापन समारोह में कहा कि मुझे यह करने में कोई झिझक नहीं है जीवोपु और आईबीसी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन 2023 अकादमिक उत्कृष्टता, वैश्विक सहयोग और आध्यात्मिक संवर्धन का एक उल्लेखनीय संगम था। कुलरति जीवोपु अर्धके सिद्धा ने कहा कि आयोजकों से लेकर प्रतिभागियों, ज्ञान साझेदारों से लेकर मीडिया साझेदारों, कर्मचारियों से लेकर स्वयंसेवकों तक सभी के प्रयासों ने इस आयोजन को बौद्ध अभ्युपन की दुनिया में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनाने में योगदान दिया।

## \*Peace March by Participants of International Buddhist Conference for Global Harmony\*hello Dhaka News.

Delhi:

In a powerful display of unity and solidarity, participants of the International Conference on Buddhism, hosted by Gautam Buddha University, came together for a World Peace Rally that sent a resounding message of hope and harmony. Representatives from 14 countries and across India gathered to pray for peace in the face of the ongoing global turmoil marked by wars, violence, terrorism, and various conflicts.

The World Peace Rally commenced at the iconic GBU Auditorium, a hub of intellectual discourse and spiritual contemplation. From there, the procession made its way to the majestic Buddha statue on the university campus, a symbol of enlightenment and compassion.

Leading the rally were revered Buddhist Monks and Nuns, spiritual figures known for their dedication to peace and mindfulness. They were joined by all the enthusiastic participants, each holding a candle as a powerful symbol of light in the current world situation marred by darkness and strife.

The candlelight procession, with its serene and reflective ambiance, conveyed a potent message of unity, compassion, and the universal desire for peace. It served as a poignant reminder of the importance of fostering global peace, understanding, and cooperation.

This World Peace Rally not only exemplified the essence of Buddhism but also echoed the broader aspirations of humanity for a world free from conflict and violence. It is a testament to the power of collective prayer and the unwavering commitment of individuals and communities to work towards a more peaceful and harmonious global future.



## Shri Ram Nath Kovind calls for introduction of Vipassana in University curriculum and training schools for bureaucracy.

The former President Ram Nath Kovind stated at Abhidhamma Event that it was on the basis of his own experience and the benefit he got from the practice of Vipassana that in a note to the PM Narendra Modi, he suggested the introduction of Vipassana amongst the trainees at the Administrative Staff College in Mussoorie and to add it to the curriculum at Gautam Buddha University, NOIDA. Speaking at Gautam Buddha University he said Vipassana will assist value based education among young minds to create a new India.

Speaking about his own experience, he said, "I am fortunate that I was introduced to the Dhamma by none other than Reverend Goenka ji. Through the practice of Vipassana Meditation, he made me experience that the teaching of the Shakyamuni Buddha, if applied in our daily life is the panacea for all the present day problems. Here I would like to say that in the modern time the contribution of Guru ji in the systematic presentation and practice of the Dhamma has been significant. As a result, we see that number of practitioners of Vipassana is increasing day by day, not only in India but throughout the World," he added.

The Abhidhamma Divas marks the descent of the Buddha from the celestial domain of the heaven to Sankasiya, presently known as Sankisa Basantapur, Farrukhabad district of Uttar Pradesh state of India. It is depicted in the Buddhist texts that after teaching Abhidhamma to the Devas and his mother as witness, he descended here. The event is marked by two more celebrations, first, the Centenary year of Vipassana Acharya Dr Satya Narayan Goenka, second along with International Conference on 'The Tenets of the Buddha Dhamma and Global Well-Being: Nature, Significance and Applicability', from 28th - 30th October, 2023.

Prof. R. K. Sinha, Vice Chancellor, Gautam Buddha University in his welcome address focused on the significance of Uttar Pradesh a cradle of Buddhism, a place where "the teachings of the Buddha" were evolved and nurtured. It's a land that resonates with the wisdom and compassion of the Buddha. Today, we stand in a state that holds profound significance in the history of Buddhism. Here, I would also like to draw your attention that out of the Eight Great Sacred Places in Buddhism, it is truly remarkable that four are situated right here in Uttar Pradesh. These sacred sites namely; Sarnath, Kushinagar, Sankissa and Sravasti are not just geographic locations; they are repositories of spiritual enlightenment and historical significance.

Special Invitee from Sri Lanka Venerable Kottepitiye Rahula Anunayaka Thero said India has made tremendous contribution to human knowledge with Buddha's teaching and we all in the Buddhist world revered this holy land of the Buddha.

Ven Dhammapiya said that at a time the world is facing violence in the name of religion, the human mind is full of hatred, anger and causing pain resulting in mutual destruction; it is only Buddha's teaching that will bring peace and stability in the society. In the spirit of this heritage, it is indeed pious occasion that we have gathered here, where the legacy of Gautam Buddha thrives. This event is even befitting and utmost auspicious as we are at Gautam Buddha University, situated in Gautam Buddha Nagar of the state, a place that embodies the teachings and principles of the Buddha, especially falls in the ancient Kuru region where the Buddha has delivered Mahasatipatthana Sutta concerning Vipassana practice.

Today, we welcome our esteemed delegates from different parts of India along with eminent delegates from 14 countries across the world. It's heartening to see such a diverse and international representation here in the campus. Your presence grace a global perspective to our discussions, and it reinforces the universal appeal of the Buddha, he said.

The event was organised by The International Buddhist Confederation (IBC) and Gautam Buddha University (GBU) in association with the Ministry of Culture. The programme was held to mark the International Abhidhamma Divas and celebrate the birth Centenary Year of the Vipassana Acharya, Dr Satya Narayan Goenka from 28th-30th October, 2023 at the Gautam Buddha University, NOIDA on the full moon day of Sharada Purnima. The theme of the programme is "The Tenets of the Buddha Dhamma and Global Well-Being: Nature, Significance, and Applicability." CHIEF GUEST: Shri Ram Nath Kovind, former President of India, SPECIAL GUEST: Most Ven. Senior Professor Kotapitiye Rahula Anunayaka Thera, General Secretary and Anunayaka (Deputy Prelate) Supreme Sangha Council of the Kotte Chapter Sri Lanka.

